



सहजन का चारा महत्व

पवन कुमार माहौर*



॥ मोरिंगा या सहजन एक तेजी से बढ़ने वाला पेड़ है और किसी भी अन्य चारा फसल/पेड़ की तुलना में प्रति इकाई क्षेत्र में विशाल बायोमास पैदा करता है। जुगाली करने वाले पशुओं के लिए एक आदर्श चारा वृक्ष मोरिंगा (मोरिंगा ओलीफेरा एल.) है। इसे फली के लिए सहज वृक्ष के रूप में जाना जाता है। भारतीय उपमहाद्वीप का यह तेजी से बढ़ने वाला पेड़, बहुदेशीय उपयोग के लिए पूरे उष्णकटिबंध में उगाया जाता है। मानवीय भोजन, पशुधन चारा, दवा, डाई, जल-शोधन और इसकी व्यापक अनुकूलन क्षमता के कारण इसे आसानी से उगाया जा सकता है। इसकी पत्तियों में विभिन्न आवश्यक अमीनो अम्ल के साथ उच्च प्रोटीन सामग्री होती है। ११

यह एक कठोर पेड़ है, जो सूखा सहिष्णु है और विविध तापमान सीमा का सामना कर सकता है। यह विभिन्न प्रकार की मृदा में उगता है और तेजी से विकसित होता है। पेड़ में मौजूद अनेक आवश्यक खनिजों के अलावा, औषधीय गुण और स्वास्थ्य लाभ भी इस पेड़ से जुड़े हैं। एक ही पेड़ में पैक किए गए ये गुण मोरिंगा को चमत्कारिक वृक्ष कहे जाने का औचित्य साबित करते हैं। मानव उपभोग के लिए उपयोग किए जाने के अलावा इस पेड़ की पत्तियों को पशु आहार/चारे में प्रमुख घटकों के रूप में उपयोग किया जाता है। मोरिंगा किसी भी अन्य चारा फसल की तुलना में कहीं अधिक बायोमास पैदा करता है

*भाकृअनुप-केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर

और पोषक तत्वों से भरपूर होता है। इसे विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में, कम उर्वरता और लवणीय मृदा में उगाया जा सकता है। यह सूखे की स्थिति के लिए भी सहनशीलता रखता है। चारा स्रोत के रूप में मोरिंगा की खेती करके स्टॉल पर खिलाए गए बकरी पालन को इसके आहार से संभव बनाया जा सकता है। मोरिंगा एक तेजी से बढ़ने वाला पेड़ है और किसी भी अन्य चारा फसल/पेड़ की तुलना में प्रति इकाई क्षेत्र में विशाल बायोमास पैदा करता है।

मोरिंगा की किस्में

सहजन की फसल सालभर में सिर्फ एक बार और वह भी कुछ ही महीने के लिए मिल पाती है। इसकी वर्ष में 2 बार फसल देने वाली प्रजातियों में रोहित 1, धनराज, केएम 1, केएम 2 और पीकेएम-1 शामिल हैं।

चारा कटाई

सहजन, दुधारू पशुओं के लिए फायदेमंद है तथा दूध बढ़ाने वाला चारा है। यह अन्य चारे से अधिक गुणकारी है। सूखे की दशा में सहजन को सहनशील व बहुवर्षीय चारा देने वाली फसल के तौर पर उपयोग में लाया जा सकता है। सहजन की पत्तियों और तने का काटा गया नरम भाग सूखे चारे के साथ मिलाकर पशुओं को खिलाया जा सकता है। मोरिंगा के हरे चारे की उपज लगभग 100-120 टन/हेक्टर/वर्ष तक प्राप्त होती है। पशुओं को खिलाने के लिए मोरिंगा की मुलायम पत्तियों एवं टहनियों को काटा जाता है, ताकि पशु अपने आहार को आसानी से चबा सकें।

मोरिंगा से प्राप्त पोषण

चारे के उद्देश्य से मोरिंगा की खेती तकनीकी रूप से आर्थिक रूप से व्यवहार्य है और कृषि-जलवायु परिस्थितियों के आधार पर उपयुक्त है। पशुधन के लिए प्रोटीन स्रोत के रूप में मोरिंगा के उपयोग में पशुपालकों रुचि बढ़ रही है। फॉस्फोरस, पोटेशियम, कैल्शियम और मैग्नीशियम जैसे मैक्रोन्यूट्रिएंट्स पशुधन की शारीरिक, चयापचय और जैव रासायनिक प्रक्रियाओं को संतुलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मोरिंगा के पत्तों में उच्च मात्रा में मैक्रोन्यूट्रिएंट, मैग्नीशियम और पोटेशियम होते हैं। इसके पत्तों को मिलाकर पशुओं की आहार और पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके पत्तों में बीटा-कैरोटीन, विटामिन सी, कैल्शियम, मैग्नीशियम और आयरन की अच्छी मात्रा होती है। इसके सेवन से चयापचय ऊर्जा 9.30 एमजे/किलो डीएम प्राप्त होती है। पशुओं में इसकी कार्बनिक पदार्थ पाचनशक्ति 72 प्रतिशत तक होती है। इसमें राख 13.2 प्रतिशत होती है। कच्चा फाइबर 10, कच्चा प्रोटीन 28.9, वसा 6.73, नाइट्रोजनमुक्त अर्क 45, तटस्थ डिटर्जेंट फाइबर (एनडीएफ) 16.7, गैर फाइबर कार्बोहाइड्रेट (एनएफसी) 38.4, एसिड डिटर्जेंट लिगनिन 6.49, सेलूलोज 5.59, हेमीसेलूलोज 4.66, कैल्शियम 2.62, फॉस्फोरस 0.43, मैग्नीशियम 0.56, पोटेशियम 2.0, सोडियम 0.03 प्रतिशत में होते हैं।